साहित्य, संस्कृति और कला का समग्र मासिक

अक्तूबर 2019 • मूल्य : 40 रुपये

# कथादेश

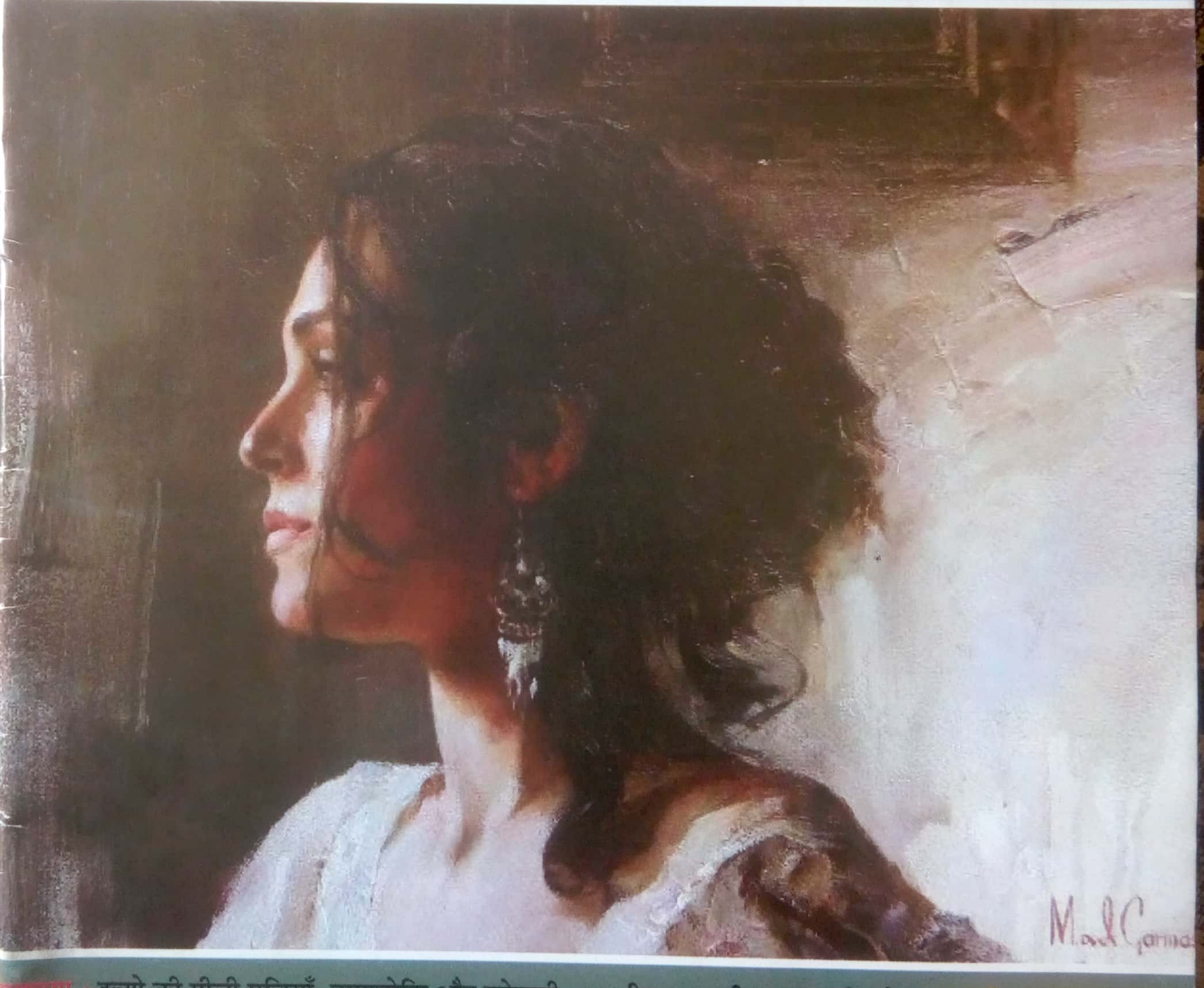


संस्मरण : इच्यो की पीली पत्तियाँ, तामाबोचि और कोसानी : लक्ष्मीधर मालवीय एक स्मृति-लेखा : अशोक अग्रवाल, संस्मरण : प्रदीप चौबे : ठहाकों का उद्घोष और गज़ल की संवेदना : संतोष चौबे, आलेख : विभाजन, विस्थापन और नयी दुनिया : विनोद शाही, पत्र : वाचस्पति पाठक के नाम धर्मवीर भारती के पत्र, कहानियाँ : ओमा शर्मा, अजय गोयल, लतिका बत्तरा, संगीता झा और एंटन चेखव, कविताएँ : अर्जुन देव चारण और विनोद कुमार श्रीवास्तव, दलित प्रश्न : पंजाबी दलित कविता-3, आभासी संसार से : प्रकाश देव कुलिश और मधुरिमा की कविताएँ, बारहमासी (व्यंग्य) : ज्ञान चतुर्वेदी, फौजी की डायरी : गौतम राजऋषि, टकटकी : रश्मि रावत, कबिरन की बातें : विश्वनाथ त्रिपाठी

Scanned with CamScanner

साहित्य, संस्कृति और कला का समग्र मासिक

# कथादेश

वर्ष : 37 पुनर्प्रकाशन वर्ष : 23 अंक : 8 अक्तूबर 2019

**संस्मरण**

5. अशोक अग्रवाल : *इच्यो की पीली पत्तियाँ, तामाबोचि और कौसानी (लक्ष्मीधर मालवीय : एक स्मृति-लेखा)*

14. संतोष चौबे : *प्रदीप चौबे : ठहाकों का उद्घोष और ग़ज़ल की संवेदना*

**कहानियाँ**

21. ओमा शर्मा : *कोहरे के बीच*

30. अजय गोयल : *परीलोक में शार्क*

58. अंतोन पी. चेखव : *डार्लिंग (रूसी कहानी)*

65. लतिका बत्तरा : *सुग्गी*

78. संगीता झा : *बेचारी सीता*

**उपन्यास अंश**

54. हृषीकेश सुलभ : *अग्निलीक*

**आलेख**

39. विनोद शाही : *विभाजन, विस्थापन और नयी दुनिया*

**दलित प्रश्न**

74. पंजाबी दलित कविता-3

**कविताएँ**

50. अर्जुन देव चारण : *सती*

52. विनोद कुमार श्रीवास्तव की कविताएँ

**आभासी संसार से**

71. प्रकाश देवकुलिश की कविताएँ

72. मधुरिमा की कविताएँ

**टकटकी**

80. रश्मि रावत : *बोलने वाली औरतों का संसार*

**धरोहर**

37. वाचस्पति पाठक के नाम धर्मवीर भारती के पत्र

**बारहमासी**

97. ज्ञान चतुर्वेदी : *सद्वचनों का चहबच्चा*

**समीक्षा**

89. सत्यनारायण : *संवेदनाओं का बक्सा*

90. अनीश कुमार : *असंग घोष की कविताओं का समाजशास्त्रीय अध्ययन (ईश्वर की मौत कविता संग्रह के संदर्भ में)*

**फौजी की डायरी**

94. गौतम राजऋषि : *और साध यूँ कि स्वर्ग भूमि पर उतार दूँ*

**परिदृश्य**

85. श्रीधरम : *साहित्य-समाचार*

**लघुकथा**

63. रेणु श्रीवास्तव : *आईपैड*

68. डॉ. पूनम सिन्हा : *उतरन*

**कबियन की वार्ता**

98. विश्वनाथ त्रिपाठी : *शांति-निकेतन में हिन्दी भवन*

कुल पृष्ठ संख्या : **96+4**

अंदर के समस्त चित्र : **अनुप्रिया**

सम्पादक
**हरिनारायण**

कानूनी सलाहकार
**मनीष पाठक**

प्रचार/प्रसार
**मुदित**

सम्पादकीय कार्यालय
एल-57 बी, दिलशाद गार्डन,
दिल्ली-110095
मो. : 7303401407, 7701938525

**E- mail :**
kathadeshnew@gmail.com

शाखा कार्यालय
**श्रीमती (डॉ.) स्मृति सिंह**
सावित्री सदन, कबीर मार्ग, बनी पार्क,
जयपुर (राजस्थान)

इस अंक का मूल्य 40/-
मूल्य वार्षिक
(व्यक्तिगत) : 400/-
रजिस्टर्ड डाक से : 600/-
मूल्य वार्षिक
(संस्था तथा लाइब्रेरी) : 600/-
रजिस्टर्ड डाक से : 800/-
आजीवन सदस्यता : 10000/-
वार्षिक (विदेश) : 50 डॉलर

सारे भुगतान चैक या बैंक ड्राफ्ट **कथादेश** के नाम से किये जायें.

कथादेश से सम्बन्धित सभी विवाद केवल दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे.

मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक हरिनारायण, एल-57 B, दिलशाद गार्डन, दिल्ली-110095 द्वारा स्वास्तिक आफसेट, एम-120, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032 से मुद्रित.



Scanned with CamScanner

◆ समीक्षा ◆

# असंग घोष की कविताओं का समाजशास्त्रीय अध्ययन

## (ईश्वर की मौत कविता संग्रह के संदर्भ में)

**अनीश कुमार**

असंग घोष हिन्दी साहित्य के महत्वपूर्ण कवि हैं. दलित साहित्य की वैचारिक पृष्ठभूमि में असंग घोष की अमिट छाप है. भारतीय समाज के विभाजकरूपी व्यवस्था व हाशिये के समाज के बीच उनकी कविता यथार्थ चित्रण प्रस्तुत करती है. असंग घोष का जन्म स्थान भी ऐसे क्षेत्र में पड़ता है जहां भारतीय समाज के विभाजक रूप ज्यादा देखने को मिलते हैं. इनका कविता संग्रह है 'ईश्वर की मौत' जो अभी हाल ही में प्रकाशित हुआ है, एक नए स्वरूप के साथ उपस्थित होती है. दलित कविता अपने विद्रोही और भिन्न कलेवर के लिए पहचानी जाती है.

हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल को कुछ आलोचक प्रगतिशील साहित्य कहकर उसे स्थापित करने का प्रयास करते हैं. लेकिन बिडम्बना यह है कि उसी काल में हाशिये के समाज के ऊपर लिखी गयी कविताओं को सिरे से नकार दिया गया. इन्हीं सब नकारों का परिणाम है दलित विमर्श. वैसे तो दलित विमर्श आत्मकथा विधा में ज्यादा सशक्त है. लेकिन हाल के कुछ वर्षों में कविता विधा में अपने विद्रोही चेतना को लेकर अपनी उपस्थिती दर्ज करवा दी है. उनकी कविताओं में रैदास के बेगमपुरा से लेकर कबीर और अंबेडकर भी दिखाई देते हैं. वह अपनी अपनी कविता के माध्यम से एक नया रास्ता तलाशने की कोशिश करते हैं.

असंग घोष की कवितायें मुख्य धारा के समाज के प्रति गहरे आक्रोश में डूबी हैं. मुख्य धारा की कविता को ये आँखें दिखाती हैं. इनके कथ्य और क्राफ्ट पर बहस हो

कविता-संग्रह
**ईश्वर की मौत**
कवि
**असंगघोष**
प्रकाशक
**सान्निध्य बुक्स, गांधी नगर, नई दिल्ली**

यही इन कविताओं की आंकाक्षा है और सफलता है. सदियों के संताप का मुहावरा अब बहुत मुखर होकर सामने है. अन्याय जब तक रहेगा, ये जमीन असल इंसान के रहने-बसने काबिल नहीं बनेगी, तब तक समाज के कानों के परदों को भेदता ये आक्रोश गूंजता रहेगा. यह साहस अब संकल्प बनकर हमारे सामने है. उनकी कविता किसी पारंपरिक सौंदर्यशास्त्र की गुलाम नहीं है. वह नया सौंदर्यशास्त्र भी बनाते हैं और नए प्रतिमान भी. आधुनिक संदर्भ में असंग घोष की कवितायें अपने नए संदर्भों के साथ सामने आती हैं. हम और हमारा समाज भले ही तीसरी सदी में जीते हुए उत्तरआधुनिक होने का नाटक कर रहा हो. लेकिन भारतीय समाज का एक हिस्सा ऐसा भी है जो ठीक से आधुनिक भी नहीं हो पाया है. उन्हीं की कथा व्यथा है असंग घोष की कवितायें. ऐसा लगता है बाजार की शक्तियाँ केवल भारत को लील रही हैं और कविता उसके आगे लाचार है. कविता लाचार हो सकती है किन्तु अब उत्पीड़ित लाचार नहीं हैं. सदियों से वंचित रहे हाशिये के समाज के मुख में आवाज आयी है. अब उन्हें उनके लिए किसी बोलने वाले की जरूरत नहीं है. वे खुद ही लिख-पढ़ और गा रहे हैं. कविता में वे गहन पीड़ा को अभिव्यक्त कर रहे हैं. पारंपरिक कलावादियों को उन्होंने धकेल दिया है. उनके अन्दर रसराज 'श्रृंगार' नहीं 'जुगुप्सा' 'भय' और 'क्रोध' अधिक है. विद्रोह की ज्वाला सभी रसों के आगे भारी पड़ रही है.

कविता की सार्थकता को स्वीकार करते हुए दलित साहित्य के वरिष्ठ कवि ओमप्रकाश वाल्मीकि लिखते हैं, "जनसंघर्ष में आदमी का सहारा बनकर जो हौसला दे, वही तो कविता है. कविता कला से ज्यादा जीवन की अदम्य लालसा, गतिशीलता की संवाहक है."

दलित साहित्य सामाजिक और सांस्कृतिक आंदोलन है. सांस्कृतिक आंदोलन को आगे ले जाने में कविता ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है. धूमिल के शब्दों में कविता भाषा में आदमी होने की तमीज है. कविता की भाषा से मनुष्य व समाज के स्तर का भी पता चल जाता है. आज जिसे हम मुख्य धारा का समाज कहते हैं असल में वह मुख्य धारा का समाज है ही नहीं बल्कि जिसे हाशिये का समाज कहा जाता है वह असली मुख्य धारा का समाज है. दलित कविता के संदर्भ में डॉ. तेज सिंह लिखते हैं, "दलित कविता की सामाजिक भूमिका और उसके सामाजिक सरोकार को आज के युवा कवियों बे बड़ी शिद्दत से महसूस किया है, इसलिए आज का युवा कवि शौक से कविता नहीं लिखता और न ही वह जबर्दस्ती कवितायें गढ़ता है, बल्कि वह तो उसके भोगे हुए यथार्थ का अशोभनीय और अमानवीय हिस्सा है. जिसकी चुभन,



Scanned with CamScanner

पीड़ा दिलो दिमाग पर अंकित हुई है और जिससे उपजे शब्दों की परिणति कविता में हुई है. कविता मन की सहज अभिव्यक्ति है."

असंग घोष की कविताओं में सदियों की जलालत की पीड़ा है, उसके घाव अभी भरे नहीं हैं. ये घाव उनकी कविताओं के माध्यम से सामने आ रहे हैं. वह एक ऐसे कवि हैं जो सब मंदिर, मस्जिद, गढ़ तोड़कर मनुष्यता के पक्ष में खड़ा होने का आग्रह करते हैं. जब समाज की बहुसंख्यक जनता एक ऐसे रास्ते पर चल पड़े जहां धर्मांधता हो, अंधभक्ति हो तो वहां एक ऐसे विरल कवि के बारे में बात करना लाजिमी है जो कविता लिखता नहीं अपितु कविता जीता है. अपने दुःख से समाज को मिलाता है. जहाँ उसे लगता है 'सर्वम दुक्खं'. वह सोचता है ऐसी कौन सी परिस्थियाँ रही होंगी जब तथागत के मुख से यही बात निकली होगी. क्या उनका समुदायवाद असंग का समुदायवाद है? क्या संबुद्ध की पीड़ा ही असंग की पीड़ा है?

विचारों की क्रांति सबसे ज्यादा ताकतवर होती है. सदियों तक दलितों की इसी आवाज अथवा विचारों को साहित्य में स्थान नहीं दिया गया. इसको लेकर असंग घोष जी चेतावनी देते हुए लिखते हैं–

*"तैयार रहो*
*अबकी बार तुम्हारा सामना*
*मुझसे ही नहीं*
*मेरी अनवरत चलती,*
*तलवार से भी ज्यादा तेज होती*
*मेरी वाणी से होगा*
*जहाँ तुम्हारी सारी करामातें*
*पस्त हो जाएंगी.*
*मेरी लेखनी की धार भी*
*तलवार जैसी*
*तेज होती जा रही है."*

उनकी कवितायें मिथकों पर सीधा प्रहार करती हैं. सदियों से सत्ता अपने हित को साधने के लिए कैसे अपने काल्पनिक प्रतिमान व मिथकों का सहारा लेती है और सत्ता की भागीदारी को सुनिश्चित करती है. कैसे वह अपनी पीढ़ियों और अपने बीजों में कुतर्क को स्थापित करती हुई शक्ति का संधान करती है.

इतिहास के पन्नों में ऐसे अनगिनत तथ्य मौजूद हैं जब हाशिये के समाज को जानवरों के बराबर भी नहीं समझा जाता था. उन्हें अलग रखा जाता था. वह सवाल करते हैं कि आखिर हम भी इनसान हैं तो हमें क्यों नहीं इनसान माना जाता. क्यों हमारे साथ जानवरों जैसा सुलूक किया जाता है. उनकी कवितायें उन ब्राह्मणवादी मूल्यों को समूल ध्वस्त कर देना चाहती हैं जिसने देश की सत्तर प्रतिशत आबादी का जीना मुहाल कर रखा है. जिनकी बनाई गई परम्पराओं से ऊंच-नीच का भेद-भाव बना हुआ है. जहाँ मनुष्य को मनुष्य नहीं समझा जा रहा है. कवि ऐसे मनु की काल्पनिक संहिताओं व स्मृतियों को जलाने के पक्ष में है जो विभेदकारी हैं. जिनसे मानव समाज को खतरा है. जाति की श्रेष्ठता को कवि ध्वस्त कर देना चाहता है. 'हम ही ध्वस्त करेंगे' शीर्षक कविता में वह लिखते हैं–

*"इंसानों की गणना में*
*हर बार*
*मेरा ही नाम छूट जाता है*
*मैं इनसान नहीं*
*ढेड़, चमार, भंगी, पासी हूँ*
*क्यों छूट जाता हूँ*
*जानवरों की गणना के बीच भी*
*मेरा नाम शुमार नहीं है,*
*मैं असुर जो हूँ, दोपाया!"*

उनकी कविता में प्रतिरोध मुखर रूप से सामने आया है. मुख्य धारा की काली करतूतों का पर्दाफाश करना चाहती हैं.

*"जानता हूँ*
*तुम नहीं बदलोगे*
*ना ही तुम्हारी*
*काली करतूतें*
*कभी बंद होंगी."*[5]

• • •

*"किन्तु*
*याद रखो*
*मैं डर कर*
*तुम्हारे विरुद्ध*
*अपना प्रतिरोध*
*कभी खत्म नहीं होने दूंगा...*
*यही प्रतिरोध*
*ताकत है मेरी"*

असंग घोष जी बिना किसी लाग लपेट के स्पष्ट और खरी खरी कहने में विश्वास करते हैं. यथार्थ को यथार्थ ही बने देना रहना चाहते हैं. आज की सच्चाई यह है कि जाति व्यवस्था के कारण आज के मनुष्य में घृणा और तृष्णा दोनों घर किये रहती हैं. जिससे मनुष्य एक स्वतंत्र चिंतन करने में असमर्थ हो जाता है. अघोषित और जबर्दस्ती थोपी गयी जाति के कारण ही समाज में दलितों को निम्न श्रेणी का मनुष्य माना जाता है. जाति आधारित भारतीय समाज में सामाजिक सम्मान की दृष्टि से उच्च जातीय व्यक्ति सदैव कम्फर्ट जोन में और दलित अनकम्फर्ट जोन में रहता है. गैर-दलितों के बीच दलित को निरंतर उपेक्षा और अपमान की आशंका बनी रहती है. वह इस आशंका से मुक्त नहीं हो पाता. जाति के कारण वह समाज में अनजान, अपरिचित और पराए की तरह जीता है. हिन्दू समाज की विभाजक व्यवस्था इसे और पुष्टता प्रदान करती है. इसी विभाजनकारी व्यवस्था से वे सवाल पूछते हैं–

*"तुमने*
*हमें हिन्दू*
*माना ही कब था*
*तुम्हारे लिए*
*हम सिर्फ*
*पासी थे*
*कोरी थे*
*भंगी थे*
*चूहड़े थे*
*चमार थे"*

जाति की जड़ें इतनी मजबूत हैं कि मनष्य के मृत्यु उपरांत भी उसका पीछा नहीं छोड़ती हैं. मरघट में भी उसके लिए जमीन नसीब नहीं होती है.

*"कौन कहता है*
*कि मरघट में*
*जाति नहीं देखी जाती*
*वह खुला है सबके लिए!*



Scanned with CamScanner

*यहाँ तो*
*हमें मरने के बाद भी*
*नसीब नहीं हैं*
*गाँव का सार्वजनिक मरघट!"*

कवि ने हाशिये के समाज को एक नई अभिव्यक्ति दी है. आज के समय में देश में संविधान लागू होने के बाद भी हाशिये के समाज की स्थिति सुधर नहीं पायी है. कवि ने इनकी अंतर्वस्तु को अपनी विशिष्ट शैली में अभिव्यक्ति दी है. 'जाति की बू' कविता में वह भारत के उन कार्यालयों की यथार्थ चित्रण करते हैं. निम्न जाति के कर्मचारियों के साथ उनके कार्यालय में भी भेदभाव का शिकार होना पड़ता है.

असंग घोष जी अपनी बात कहने के लिए बिंबों व प्रतीकों का भी सहारा लेते हैं. उनकी कविताओं में बिम्ब व्यंगात्मक शैली में प्रयुक्त हुए हैं. समाज का एक पक्ष ऐसा भी जो हमेशा से मुफ्त का माल खाता आया है. आज भी उसकी कोशिशें जारी हैं. यहाँ सूअर को उन्होंने समाज के उस वर्ग से सम्बद्ध किया है जिसने समाज को बांटने का कार्य किया है.

*"मुफ्त का माल*
*खाने की*
*लालसा में*
*मग्न इस सूअर ने*
*सीधे मुँह मारते हुए*
*अपनी थूथन*
*आँखों तक*
*मसालेदार बासी सब्जी से*
*लबरेज बाल्टी में घुसेड़ दी"*

दलित आज मुख्यधारा की राजनीति का हिस्सा जरूर बन गये हैं, लेकिन उनके बुनियादी मुद्दे अभी-भी मुख्यधारा के विमर्श से बहुत दूर हैं. बल्कि यह कहना ज्यादा सही होगा कि राजनीति के केन्द्र में आते-आते उनके मुद्दे राजनीति के शिकार हो गये हैं. दलितों की तकलीफें, जरूरत, गुस्सा, आक्रोश आदि को अभिव्यक्त करने वाले भी कहीं न कहीं राजनीति या फिर गुटबंदी के शिकार हुए हैं.

असंग घोष की कविताएं जिस पीड़ा, संत्रास, टूटन या अपमान को तीव्रता से महसूस करने के बाद लिखी गयी हैं, लगभग उसी स्तर की तकलीफ ये पाठकों को भी महसूस करवाने में सफल होती हैं. अपने ही देश-समाज के लोगों से मिली इतनी घृणा, वैमनस्य और हीनता को स्वयं भोगने के बाद, कवि मनुष्य व्यवहार में इतनी अमानवीयता को 'कपोल कल्पना' कहता है. प्रत्येक दलित कवि ने अपने जीवन में कभी न कभी, किसी न किसी रूप में जातिगत अन्याय, अपमान और उपेक्षा का दंश झेला है. दर्द के साथ दलित का रिश्ता जन्म से ही शुरू हो जाता है. जन्म से ही वे निम्न जातीय और हेय समझे जाते हैं. जातिगत भेदभाव, उपेक्षा और अस्पृश्यता का शिकार होते हैं. यह अन्याय और अमानवीयता का घृणिततम रूप है. दलित की अनुभूति दर्द की अनुभूति है. दर्द के अलावा उन्हें और कुछ नहीं मिला है. इसकी पीड़ा उसे निरंतर व्यथित और विकल बनाती है. यह दर्द ही उनकी कविताओं में अभिव्यक्त हुआ है. इसलिए यह बहुत स्वाभाविक है कि दलित कवि का मन जाति के प्रति नकार और विद्रोह से भरा है. अब वह कह रहा है कि वह कमजोर नहीं हैं–

*"तुम्हारे खिलाफ खड़ा होने*
*मेरी कमजोरी को ही*
*खुद की ताकत बनाने का संबल देती हुई*
*मेरी मजबूती*
*मुझे यह अहसास करती है*
*कि मैं कमजोर नहीं हूँ"*

ईश्वर के अस्तित्व के ऊपर सवाल खड़े करते हैं. चार्वाक दर्शन ईश्वर के अस्तित्व को ही नकारता है. बहुजन नायिका सावित्रीबाई फुले की कविताओं में ईश्वर के प्रति विद्रोह प्रकट हुआ है. कबीर, रैदास, सावित्री, मक्खलि गोशाल के परंपरा को आगे बढ़ाते हुए असंग घोष अपनी कविताओं में ईश्वर से वार्तालाप करने की स्थिति में सवाल पूछते हैं.

*"मुझे नफरत होती है*
*तुम्हारी सोच से,*
*यहाँ तक*
*कि तुम्हारे धर्म से भी*
*दीवारों पर टंगे*
*शब्दों को देखने*
*विलसरत ईश्वर!*
*कभी गर्भगृह से*
*बाहर आया ही नहीं*
*अन्यथा वह भी पढ़ता*
*कि शूद्र मंदिर में प्रवेश न करें!"*

'ईश्वर से सवाल' शीर्षक कविता में वह लिखते हैं–

*"ईश्वर!*
*तुझे*
*शृंगार*
*भोग विलास*
*नैवेद्य*
*चढ़ावा*
*दर्शनों और*
*शयनों से*
*फुर्सत मिले*
*तो*
*गर्भगृह छोड़*
*सीढ़ियाँ उतर नीचे*
*जमीन पर आना*
*अपने हालातों पर करने हैं*
*तुझसे चंद सवाल!"*

समाज की कलुषित राजनीति और उससे संचालित होने वाला समाज हमेशा नफरत ही सिखाता है. जिस समाज का पवित्र ग्रंथ महाभारत हो और उसमें शकुनि मामा जैसा पात्र हो तो वह समाज वैसी ही राजनीति व कूटनीति सीखेगा. वाल्मीकि रामायण में राजा राम द्वारा निर्दोष शंबूक की हत्या कर दी जाती है. ये सभी उदाहरण एक सभ्य समाज के नहीं हो सकते हैं. इतिहास की तरफ इशारा करते हुए कहते हैं कि–

*"अर्थनीति*
*राजनीति*
*कूटनीति*
*दंडनीति*
*छलनीति*
*सबकी सब तुम्हारे खून में रची बसी थी*
*तुमने धर्म का सहारा ले*
*मार दिया मेरे पुरखों को*



Scanned with CamScanner

*बेमौत."*

प्रतिष्ठित कवि वीरेन डंगवाल ने लिखा है कि "आज यह देखना बेहद जरूरी है कि कविताएँ अपनी जमीन के संकटों को पहचानने का काम कर रही हैं, वे अपने समाज की हर परत में जाने का कार्य कर रही हैं या नहीं?" असंग घोष की कविताएँ सपाट भाषा में लिखी कविता होने के बावजूद वैचारिक तौर पर उद्वेलित करती हैं, जो समकालीन समय की कठिनतम चुनौतियों का सामना करने में सक्षम हैं.

उनकी कविताओं में ग्रामीण चेतना है तो साथ ही साथ नगरीय जीवन बोध और कसबाई जिंदगी का यथार्थ अंकित हुआ है. कवि ने जिस स्वच्छंदता से समाज व संस्कृति के सपंदनों को अंकित किया है. वह अन्यत्र दुर्लभ है. अकेलेपन की त्रासदी हो संघर्षशीलता, बाजारवादी अर्थव्यवस्था के दुष्परिणाम हो अथवा अदम्य जिजीविषा, कवि ने जीवन के अनकही सच्चाइयों को अत्यंत संवेदनशीलता के साथ उकेरा है. लोकभाषा और लोकजीवन को आज बनाये रखने की जरूरत है. कवि उसी लोकभाषा को अपनी कविता की भाषा बनाया है. आज साम्राज्यवादी शक्तियाँ इनको समूल नष्ट करना चाहती हैं. सच तो ये है कि उन शक्तियों को पराजित करने के लिए लोकभाषा ही सबसे ज्यादा कारगर हथियार है. जनमानस की भाषा को ही दलित कविता अपनी भाषा के तौर स्वीकार करती है.

असंग घोष की कवितायें बहुत कम शब्दों में बहुत कुछ कह जाने की सामर्थ्य रखती हैं. उनके प्रतिरोध का तरीका थोड़ा अलग है. चुपके से एक आध शब्दों में जो विरोध दर्ज हो जाता है वह हिन्दी के अन्य कवियों में नहीं देखने को मिलता है. असंग घोष जी अपने समय और समाज को किस प्रकार व्याख्यायित करते हैं इस पर भी विचार व अध्ययन करने की आवश्यकता है. कोई भी महत्वपूर्ण कवि अपने समय और समाज से अप्रभावित नहीं होता है. समय की गूंज उसकी रचना में अवश्य दिखाई देती है. समाज की विसंगतियाँ बिडंबनाएं, विषमता आदि उसकी रचनाओं में आवश्यक रूप से देखी जा सकती हैं. पिछले कई वर्षों से सांप्रदायिकों, धार्मिक उन्मादियों, विघटनकारी शक्तियों तथा संकीर्णतावादी शक्तियों की तादात में बड़ी तेजी से बढ़ोत्तरी हो रही है. इसके फलस्वरूप राष्ट्रीय एकता प्रभावित हुई है. मानव जाति अपने आप में सिकुड़ने लगी है.

असंग घोष जी समाज के उन सभी पक्षों को अपने कविता का विषय बनाया जिन्हें छूने में अमूमन कवि डरते हैं. इनकी कवितायें शोषणरहित मानवतावादी एवं समतावादी समाज की स्थापना के पक्षधर हैं. समता, स्वतन्त्रता, बंधुत्व और सामाजिक न्याय आदि मूल्यों की स्थापना के पक्षधर हैं. इनकी कविता प्रतिरोध को अभिव्यक्त करते हुए एक नए प्रकार के साहित्यिक सौन्दर्य की स्थापना करती हैं. समाज का एक ऐसा हिस्सा जो सदियों से उपेक्षित रहा है, वंचित रहा है उसकी आवाज इनकी कविताओं में दिखाई देती हैं.

मानसिक प्रताड़नाओं के फलस्वरूप जन्मीं ये कवितायें व्यवस्था व सत्ता में प्रतिरोध को जन्म देती हैं. समाज में अमूर्त रूप में रचा-बसा 'विद्वेष' समय समय पर अपने रूप बदलकर हाशिये के समाज को झांसा देता रहता है. दलित कवि के सामने ऐसी भयावह स्थितियाँ निर्मित करने की अनेक प्रमाण हर रोज आते हैं. जिनके बीच में अपना मार्ग तलाशना कठिन हो जाता है. एक दलित कवि का यही प्रयत्न होता है कि इस भयावह त्रासदीमय वातावरण से मनुष्य स्वतंत्र होकर मनुष्य प्रेम व भाईचारे की ओर अग्रसर हो. जिसका अभाव हजारों सालों वर्षों से साहित्य और समाज में परिलक्षित होता है.

दलितों को मंदिर में उपासना या पूजा तो दूर की बात है उनमें उनको प्रवेश तक वर्जित रहा है और कहीं कहीं आज भी वह स्थिति जारी है. इसके अलावा किसी स्थान पर काम करने की सामाजिक स्वीकृति भी उच्च वर्ग ने नहीं दी थी. सौम्यता और आक्रोश दलित कविता में साथ-साथ चले हैं. मध्यकाल में रविदास की वाणी में सौम्यता थी तो कबीर की वाणी सामाजिक विसंगतियों के प्रति आक्रोश से युक्त थी हीरा डोम ईश्वर से विनम्र स्वर में अपनी पीड़ा और दुख का बयान करके सवाल करते हैं तो उनके समकालीन स्वामी अछूतानंद हिंदू धर्म की विषमतामूलक प्रवृत्तियों और धर्मग्रंथों की प्रखर आलोचना करते हैं. यही प्रवृत्ति आज असंग घोष की कविताओं में दिखाई देती है.

*"क्या*
*ईश्वर छप्पनभोग भक्षण का मोह त्याग*
*अट्टालिकाओं के*
*विलासी गर्भगृह में रहता हुआ*
*बेहिसाब अंधी कमाई,*
*उस पर सोलह हजार रानियों का संग*
*छोड़कर*
*आएगा कभी गर्भगृह से बाहर*
*इस चिलचिलाती हुई*
*स्याह कोलतार की सड़क पर उतर*
*हमारे साथ आडंबरवादियों से दो-दो*
*हाथ करने !"*[4]

हिन्दी के तथाकथित कुछ विद्वानों, आलोचकों को लगता है कि आज के समय में दलित का जीवन बदल चुका है लेकिन दलित कवि और साहित्यकार अभी भी अतीत का रोना रो रहे हैं और उनकी अभिव्यक्ति आज भी वहीं फुले, अम्बेडकर, पेरियार के समय में ही अटकी हुई है. यह एक अजीब तरह का आरोप है. आज भी दलित उसी पुरातन पंथी जीवन को भोग रहा है जो अतीत ने उसे दिया था. वास्तविकता इससे कोसों दूर है. महानगरों में रहने वालों की वास्तविक स्थिति वैसी नहीं है जैसी दिखाई दे रही है. यदि स्थितियां बदली होतीं तो दलितों को अपनी आइडेंटीटी छिपाकर महानगरों की आवासीय कालोनियों में क्यों रहना पड़ता. वे भी दूसरों की तरह स्वाभिमान से जीते, लेकिन नहीं हुआ. समाज उन्हें मान्यता देने के लिए आज भी तैयार नहीं है. असंग घोष की कवितायें इसी आइडेंटिटी को सामने लाने प्रयास कर रही हैं. आज के समय में असंग घोष के बड़े फलक पर अपनी पहचान बनाने में सफल हुए हैं. ▣

**anishaditya52@gmail.com**
**मो. : 09198955188,**



Scanned with CamScanner